श्री गणेशाय नम:

जन्म समय संशोधन – बर्थ टाईम रेक्टिफिकेशन

(हिन्दी भाषी पाठकों को समर्पित)

लेखक : व्योमेश दीपंकर

e-mail: wyomeshd@yahoo.com

wyomeshd@yahoo.com

For Personal Use Only

शनिवार,
मार्च 19, 2011
14:46 (भारतीय मानक समय)
होलिका दहन
सुपरमून (पूर्णिमा)

रूलिंग प्लानेट्स के द्वारा जन्म समय संशोधन

1. दिए गये समय के अनुसार जन्म कुंडली बनाईये ।
2. जिस स्थान और जिस समय कुंडली बनाई है उस समय के ग्रह स्पष्ट ज्ञात कीजिये ।
3. क्रमांक 2 में ज्ञात किये गये ग्रह स्पष्ट के आधार पर रूलिंग प्लानेट्स ज्ञात कीजिये ।

रूलिंग प्लानेट्स मुख्यत: 5 माने जाते हैं –

लग्नाधिपति

लग्न नक्षत्राधिपति

चन्द्र स्थित राशि का स्वामी

चन्द्र का नक्षत्राधिपति

वाराधिपति

wyomeshd@yahoo.com

कुछ ज्योतिषी लग्न और चन्द्र के न.उप. (सब लॉर्ड) को भी रूलिंग प्लानेट्स में शामिल करते हैं । मैं प्रारम्भ में उपरोक्त 5 रूलिंग प्लानेट्स का उपयोग करता हूँ । यदि समस्या जटिल दिखाई पड़े तब सब लॉर्ड्स को भी रूलिंग में शामिल कर लेता हूँ । कई ज्योतिषी वक्री ग्रह के नक्षत्र में स्थित रूलिंग प्लानेट्स को हटा देते हैं और ऐसे में जब हमारे पास 4 से कम रूलिंग प्लानेट बचते हैं, या रूलिंग प्लानेट एक ही होने के कारण वे संख्या में 4 से कम होते हैं तब मैं लग्न और चन्द्र के न. उप. स्वामी को भी रूलिंग में शामिल कर लेने की सलाह दूंगा । वैसे तो यह शोध का विषय है कि जन्म–समय–संशोधन करते समय वक्री ग्रह के नक्षत्र में स्थित रूलिंग प्लानेट्स को हटा दिया जाये या नहीं । प्रश्न कुंडली के अध्ययन में यह बात ठीक लगती है क्योंकि वक्री ग्रह के नक्षत्र में स्थित रूलिंग प्लानेट की दशांतर्दशा में वह ग्रह परिणाम नही देता । परंतु जन्म समय संशोधन में ऐसा करना उचित है या नहीं यह तो ज्योतिषी के तजुर्बे पर निर्भर करता है । जन्म समय संशोधन के वक्त केवल ग्रहों का आपस में सम्बन्ध देखा जाता है, तो उनके वक्री ग्रह के नक्षत्र में स्थित होने या ना होने का कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिये । वैसे आप स्वतंत्र हैं कि आपकी क्या सोच है, मुझे तो इन्हे हटाए बिना ही बेहतर परिणाम प्राप्त होते रहे हैं ।

For Personal Use Only

यह ध्यान में रखने वाली बात है कि यदि राहु और केतु किसी रूलिंग प्लानेट का प्रतिनिधित्व करते हों, उदाहरण के लिये यदि राहु केतु किसी रूलिंग प्लानेट की राशि मे, नक्षत्र में , युति में स्थित हो, या उनसे दृष्ट हो, अथवा रूलिंग प्लानेट स्वयं राहु/केतु के नक्षत्र में हो तो राहु और केतु को भी रूलिंग प्लानेट में शामिल कर लेना आवश्यक हो जाता है ।

4. अब जन्म लग्न के सामूहिक शासकों – लग्न के स्वामी, लग्न के नक्षत्र स्वामी, लग्न के न.उप स्वामी और लग्न के न. उप.उप. स्वामी आदि को देखिये । यदि ये सभी रूलिंग प्लानेट्स में उपस्थित हैं तो समझें कि दिया गया समय लगभग शुद्ध है और हमें अब केवल इस दिये गये समय के हिसाब से जातक का लिंग परीक्षण और करना है । यदि वह भी ठीक आये तो जन्म समय को शुद्ध मान लीजिये और उसमें कोई संशोधन न कीजिये । यदि इनमें से कोई एक भी रूलिंग प्लानेट्स में उपस्थित न हो तो समझिये कि संशोधन की आवश्यकता है ।

5. यदि जन्म लग्न के सभी सामूहिक शासक रूलिंग प्लानेट्स में उपस्थित हैं और केवल लिंग परीक्षण अनुत्तीर्ण हो रहा हो तो समझिये कि लग्न का न.उप.उप. स्वामी सही नही है और आपको केवल कुछ सेकेण्डों का ही संशोधन (धन/ऋण) करना है । लिंग परीक्षण की विधि बाद में बताई जायेगी ।

एक प्रश्न यह उठेगा कि जन्म समय में ये सेकेण्ड जोड़े जायें अथवा घटाये जायें ? यह आप रूलिंग प्लानेट्स के बलाबल से जांच सकते हैं । मान लीजिये कि लग्न का न. उप.उपाधिपति राहु है और राहु रूलिंग में उपस्थित है, परंतु इसके द्वारा लिंग सही नही आता । तो कुछ सेकंड जोड़ने पर राहु के बाद गुरु न.उप.उप. बनेगा और कुछ सेकेंड घटाने पर विंशोत्तरी क्रम में राहु से एक पहले वाला अर्थात मंगल लग्न का न. उप.उप. बनेगा । यदि ये दोनो, मंगल और गुरु यदि रूलिंग में उपस्थित हैं तो हमें इनका बलाबल देखना होगा, यदि मंगल रूलिंग लग्न का नक्षत्राधिपति है और गुरु वाराधिपति है तो निश्चित रूप से मंगल विजयी होगा क्योंकि वह अधिक बलवान रूलिंग प्लानेट है । तब चूंकि कुछ सेकण्ड घटाने पर मंगल मिला था इसलिये ईश्वरीय इशारा मिल गया कि हमें घटाते रहना है जब तक लिंग सही न आ जाये ।

यदि ये दोनो, गुरु और मंगल, रूलिंग में उपस्थित नही होते तो फिर कुछ सेकंड जोड़ और घटा कर अगले दो ग्रह जांचना पड़ते । यदि इनमें से एक रूलिंग में उपस्थित होता तो निश्चित रूप से हम उसकी ओर जोड़ या घटा कर लिंग निर्धारण करते ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

अन्य सरल विधि यह है, कि आप जोड़िये भी और घटाईये भी, और तब आपके पास ऐसे दो समय होंगे जिसमें लिंग सही आता हो । इन समयों पर न.उप.उप. रूलिंग में उपस्थित हो यह भी ध्यान रखिये । तो इनमें से जो समय बताये गये समय के अधिक निकट हो, या जिस समय के हिसाब से प्राप्त न.उप.उप. रूलिंग में अधिक बलवान हो उस समय को ले लीजिये ।

6. अब तक तो केवल यह जांच थी और संशोधन तो कुछ सेकेण्डों का ही था । असली विधि तो अब लगानी बाकी है ।

जन्म लग्न के चारों सामूहिक शासक लिख लीजिये ।

रूलिंग चन्द्र के चारों सामूहिक शासक लिख लीजिये ।

अब इन शासकों के मध्य वर्तमान ग्रह स्थिति में सम्बन्ध खोजिये । सम्बन्ध कैसा भी हो सकता है, जैसे राशि में स्थिति, राशि के स्वामी के साथ युति, दृष्टि सम्बन्ध, या नक्षत्र, उप. या उप.उप. में स्थित होना आदि । यह सम्बन्ध एक–एक का होना चाहिये अर्थात लग्न के स्वामी का सम्बन्ध चन्द्र के राशि स्वामी से, लग्न के नक्षत्राधिपति का सम्बन्ध रूलिंग चन्द्र के नक्षत्राधिपति के साथ इत्यादि ।

उदाहरण –

मान लीजिये कि –

जन्म लग्न के सामूहिक शासक हैं – सूर्य–राहु–गुरु–चन्द्र

रूलिंग चन्द्र के सामूहिक शासक हैं – बुध–मंगल–गुरु–शनि

सामूहिक शासक राशि/नक्षत्र/उप./उप.उप. होते हैं ।

तो सर्वप्रथम सूर्य और बुध का सम्बन्ध वर्तमान ग्रह स्थिति में देखिये । माना कि सूर्य और बुध की किसी भाव में युति है । तब यह सम्बन्ध हुआ और आप यह समझिये कि जातक की राशि सही है, उसमें संशोधन की ज़रूरत नहीं ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

फिर जातक के जन्म नक्षत्र की जांच करिये । इसके लिये उपरोक्त राहु–मंगल का सम्बन्ध होना आवश्यक है । मान लीजिये कि मंगल की राहु पर दृष्टि है, तो राहु मंगल का प्रतिनिधि भी हुआ । अत: यह सम्बन्ध है । समझिये कि जातक के नक्षत्र का स्वामी भी सही है ।

गुरु–गुरु तो एक ही हैं, पर यदि वर्तमान ग्रह स्थिति में गुरु का गुरु से सम्बन्ध भी हो तो बेहतर, जैसे गुरु स्वराशि में स्थित हो, गुरु अपने ही नक्षत्र/उप/उप.उप. में स्थित हो इत्यादि ।

चन्द्र–शनि का सम्बन्ध, मान लीजिये कि चन्द्र शनि की राशि में स्थित है, तो हो गया सम्बन्ध । अर्थात जन्म समय में बस थोड़ा बहुत ही संशोधन करना पड़ सकता है यदि प्राप्त लग्न के सामूहिक शासकों के अनुसार उसका लिंग दूसरा हो । जैसे स्त्री की कुंडली हो और लिंग पुल्लिंग आता हो । राशि में संशोधन करने के लिये घंटों का संशोधन करना पड़ सकता है क्योंकि एक राशि लगभग 2 घंटे की होती है । न.उप. में संशोधन के लिये कई मिनिटों का संशोधन करना पड़ सकता है आदि ।

7. जब आप सभी संशोधन कर चुकें तो पुन: एक बार जांच लें कि लिंग भी सही हो और लग्न के सभी शासक रूलिंग प्लानेट्स में उपस्थित भी हों । ऐसा होने से यह सुनिश्चित हो जायेगा कि संशोधित समय शुद्ध है ।

8. या फिर इस प्रकार ज्ञात संशोधित समय के अनुसार प्राप्त लग्न के सामूहिक शासकों का जन्म कुंडली के 9वें भाव के सामूहिक शासकों के साथ सम्बन्ध है तो उत्तम । या फिर जन्म कुंडली के चौथे और नौवे भाव के सामूहिक शासकों के मध्य यदि जन्मकुंडली में सम्बन्ध होता हो तो भी उत्तम । क्योंकि लग्न जातक है, चतुर्थ भाव माता का और नवम भाव जातक के पिता का होता है और जातक के जन्म में इनकी विशिष्ट भूमिका होती है । कई और विधियां भी प्रचलित हैं यथा –

1. जन्म समय और वर्तमान (कुंडली निर्माण) समय के रूलिंग प्लानेट्स में वर्तमान ग्रह स्थिति में सम्बन्ध । सम्बन्ध तो पूर्वोक्त बताई विधि के आधार पर ही निकलेगा, बस अंतर यह होगा कि यह रूलिंग प्लानेट्स के बीच होगा । जैसे यदि जन्म वाराधिपति शुक्र है और रूलिंग वाराधिपति चन्द्र है तो वर्तमान (कुंडली निर्माण के समय के) ग्रह–स्पष्ट में शुक्र और चन्द्र का सम्बन्ध होना चाहिये इत्यादि ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

2. इसके अलावा भी कई प्राचीन, वैदिक और नई विधियां भी प्रचलन में हैं जिनका वर्णन करना इस आलेख में सम्भव नहीं । मुझे तो उपरोक्त विधियों से ही संतोषप्रद परिणाम प्राप्त हो जाते हैं इसलिये किसी अन्य विधि की कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी ।

अपना एक अनुभव आपके साथ बांटना चाहूंगा । वह यह कि यदि आप किसी भी प्रकार कोई निर्णय पर न पहुंच पा रहे होन, यथा कोई सम्बन्ध निकल ना रहा हो, या संशोधन के उपरांत भी कमी खल रही हो तो उस समय उस पत्रिका का अध्ययन ना करें , क्योंकि रूलिंग प्लानेट्स ही इस प्रकार के होंगे कि आप किसी निर्णय पर नही पहुच पा रहे हों उस दिन । इसे ईश्वरीय ईशारा मान कर उस दिन जन्म समय संशोधन की प्रक्रिया को स्थगित कर दीजिये और अगले या किसी अन्य दिन पुन: कुंडली बना कर कोशिश कीजिये, सफलता मिल जायेगी ।

पर कई बार ऐसा भी होता है कि जातक आनन फानन आ कर तुरंत कुछ भविष्य कथन चाहता है, उसे समय या धीरज नही होता । ऐसे में आप बताये गये समय के अनुसार ही भविष्य कथन कीजिये परंतु सटीकता से करने की कोशिश ना कीजिये, यथा केवल प्रत्यंतर्दशा तक ही भविष्य कथन कीजिये, जैसे आपकी शादी वर्ष 2011 के उत्तरार्ध में हो जायेगी इत्यादि । ऐसा भविष्यफल बताने की चेष्टा न कीजिये कि आपकी शादी 12 दिसम्बर 2011 को रात्रि 8 से 12 के बीच होगी क्योंकि इस समय आप नहीं जानते कि जन्म समय कितना शुद्ध है । और ऐसी स्थिति में मेरे अनुसार आप यदि प्रश्न कुंडली का सहारा लें तो उत्तम है क्योंकि इस प्रकार आया जातक किसी विशेष प्रश्न का उत्तर ही चाहता है । तो 1–249 मे से कोई अंक जातक से चुनवाकर उसके अनुसार प्रश्न लग्न निर्धारण करें और प्रश्न कुंडली के आधार पर उसके प्रश्न का उत्तर देवें ।

9. कई बार ऐसा भी होता है कि जातक कोई समयांतराल बताता है, जैसे मेरा जन्म सुबह 9 से 12 के बीच हुआ है । ऐसे में भी रूलिंग प्लानेट का सहारा लीजिये ।

देखिये कि 9 से 12 के बीच कौन कौन सी लग्न पड़ती हैं । जिस लग्न का स्वामी रूलिंग में उपस्थित हो वह लग्न पहले सुनिश्चित करके जातक के लग्नाधिपति को ज्ञात कीजिये । फिर इसी प्रकार नक्षत्र, न.उप और उप.उप. को भी ज्ञात कर लीजिये । यदि दोनो लग्न के स्वामी रूलिंग में हों तो फिर बलाबल से निर्णय कर लीजिये और जो अधिक बलवान हो उसे लग्नाधिपति के रूप में चुन लीजिये ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

उदाहरण के लिये मान लीजिये कि प्रात: 9 से 12 के बीच 2 लग्न पड़ रही हैं, वृषभ और मिथुन । तो यदि केवल बुध रूलिंग में है तो समझिये कि मिथुन लग्न होगा । यदि शुक्र और बुध दोनो रूलिंग मे हैं तो देखिये कौन बलवान है । माना कि शुक्र चन्द्र का न.उप. है और बुध रूलिंग लग्न का राशि स्वामी है । तो बुध पहले दर्जे का रूलिंग प्लानेट होने से लग्न मिथुन होगी यह सुनिश्चित कर लिया ।

मान लीजिये कि मिथुन लग्न 11 बजे शुरु हो रही है, तो अब हमारे पास 11–12 का समय हो गया जिसमे जातक का जन्म हुआ । 11 बजे की कुंडली बनाईये और पूर्वोक्त विधि से जातक का सही जन्म नक्षत्र, न.उप और उप.उपाधिपति सुनिश्चित करने के उपरांत लिंग परीक्षण भी कर लीजिये । बस सही जन्म समय मिल जायेगा ।

10. कई बार ऐसा होगा कि जातक को केवल जन्म का नक्षत्र ज्ञात होता है, जन्म समय नही । ऐसे में देख लीजिये पंचांग में कि उस दिन वह नक्षत्र कितने समय तक रहा है । मान लीजिये कि नक्षत्र आरम्भ 12/03/2011 को रात्रि 10 बजे से 13/03/2011 शाम 6 बजे तक रहा है । तब आपको दो तिथियों को लेकर जन्म समय संशोधित करना होगा । किसी एक तिथि को चुनने का एक तरीका यह हो सकता है कि आप कुंडली निर्माण के समय के वाराधिपति और 12 और 13 मार्च के वाराधिपति में सम्बन्ध देख लीजिये । जिसके साथ अधिक अच्छा सम्बन्ध हो वो तारीख लीजिये । या फिर लम्बी प्रक्रिया ही लीजिये । जैसे पहले 12/03/2011 रात्रि 10 से 13/03/2011 शाम 6 बजे तक कौन कौन सी लग्न पड़ रही है उन सभी के स्वामियों को लिख लीजिये और इनमे से रूलिंग में जो सर्वाधिक सबल हो वह लग्न सुनिश्चित करके इसी प्रकार शेष सामूहिक शासकों यथा नक्षत्र, न.उप. , उप.उप. स्वामियों को ज्ञात कर लिंग निर्धारण तक की प्रक्रिया को अपनाईये ।

11. कई बार जातक को जन्म तारीख ही ज्ञात नही होती । तो किसी भी जातक की कुंडली का अध्ययन करने और जन्म समय संशोधन में समय बिताने से अच्छा होगा कि आप जातक क्या चाहता है वह पहले ज्ञात कर लीजिये । यदि जातक किसी विशेष प्रश्न का उत्तर जानना चाहता है, जैसे मेरी माता कब स्वस्थ होगी, या फिर मैं परीक्षा में पास हूंगा या नहीं आदि, तब आप ऐसे प्रश्नों का उत्तर प्रश्न कुंडली से दें तो बेहतर होगा । और प्रश्न कुंडली से आप जातक के सभी प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे सकते हैं और जन्म समय की शुद्धि की दुरूह प्रक्रिया से बचते हुए समय का सदुपयोग भी कर सकते हैं ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

लिंग निर्धारण की विधि

लग्न का उप.उप. स्वामी = ग्रह अ.

ग्रह अ. का न.उप.उप. स्वामी = ग्रह ब.

ग्रह ब. का न.उप. स्वामी = ग्रह स.

ग्रह स. यदि पुरुष संज्ञक नक्षत्र में स्थित है तो पुल्लिंग और यदि स्त्री संज्ञक नक्षत्र में स्थित है तो स्त्रीलिंग ।

अश्विनी, भरणी, रोहिणी, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र पुरुष संज्ञक होते हैं ।

उपरोक्त ग्रह स. यदि धनु राशि में सूर्य के नक्षत्र उत्तराषाढा के अधिकार क्षेत्र में स्थित है तो चूकि यह एक पुरुष संज्ञक नक्षत्र है जातक का लिंग पुल्लिंग होना चाहिये। यदि सही लिंग नहीं आता है तो फिर जन्म समय संशोधन की आवश्यकता पड़ती है और 10–10 सेकण्ड जोड़ घटा कर लग्न के न.उप.उपाधिपति को बदल कर उपरोक्त विधि से सही लिंग का निर्धारण किया जाता है और एक बार पुन: लग्न के इस न.उप.उप स्वामी के लिये भी जन्म समय संशोधन के नियम लागू कर देख लिये जाते हैं ।

उदाहरण के लिये यदि – जन्म लग्न के सामूहिक शासक मंगल–शुक्र–शुक्र–सूर्य हों तो

लग्न का न.उप.उप = सूर्य

माना कि सूर्य का न.उप.उप. = बुध

माना बुध का न.उप = बुध, बुध यदि मेष राशि में शुक्र के नक्षत्र क्षेत्र भरणी में स्थित है तब भरणी के पुरुष संज्ञक नक्षत्र होने से जातक का लिंग पुल्लिंग होना चाहिये ।

मान लीजिये कि वह स्त्री है, पुरुष नहीं है । तब ऐसी स्थिति में जन्म समय संशोधन करना होगा । विंशोत्तरी दशा क्रम में सूर्य से एक पहले शुक्र, और एक बाद चंद्र आयेगा 10–10 सेकंड जोड़ने से । तब यदि शुक्र रूलिंग में चंद्र से बलवान है और चंद्र के न.उप.उप. से भी वर्तमान ग्रह स्थिति में सम्बंधित है तब शुक के अनुसार उपरोक्त नियम से लिंग निर्धारण किया जायेगा और यदि शुक्र से नियम की पूर्ति हो जाये तो वोही समय संशोधित समय हो जायेगा । यदि शुक्र द्वारा नियम की पूर्ति नही होती तो फिर जोड़ घटा कर अन्य समय लेकर दूसरे न.उप.उप. स्वामियों के द्वारा पुन: गणना की जायेगी ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

प्रायोगिक खण्ड

इस भाग में कुछ उदाहरणों की सहायता से मैं आपको जन्म समय संशोधन की उपरोक्त विधि समझाने का प्रयास करूंगा ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

उदाहरण कुंडली – 1

जातक (पुरुष) , 14 जुलाई 1980, 16:55 (भारतीय मानक समय, समय क्षेत्र 05:30)
अक्षांश 22:52 उत्तर, रेखांश 78:50 पूर्व
प्रयुक्त केपी अयनांश – 23:29:6

1. जन्मलग्न के सभी सामूहिक शासकों का रूलिंग प्लानेट्स (वर्तमान) में उपस्थित होना ।

कुंडली निर्माण के समय के रूलिंग प्लानेट्स – 19 मार्च 2011, रात्रि 23:31:43 बजे

लग्न के सामूहिक शासक (राशि, नक्षत्र स्वामी) – मंगल, शनि

चन्द्र के सामूहिक शासक – बुध, सूर्य

दिनाधिपति – शनि

तो रूलिंग प्लानेट्स हुए मंगल, शनि, बुध, एवं सूर्य ।

जन्म के समय के लग्न के सामूहिक शासक हैं – मंगल, बुध, शनि, चन्द्र

अब देखिये कि मंगल, शनि, बुध तो जन्म लग्न में उपस्थित हैं परंतु चन्द्रमा नहीं है । और चूंकि उप. उपाधिपति चन्द्र उपस्थित नही है इसलिये केवल कुछ मिनिट का ही संशोधन करना होगा । वैसे देखा जाये तो गोचर का चन्द्रमा बुध की राशि, सूर्य के नक्षत्र और शनि के न.उप. में स्थित है और ये तीनो ही रूलिंग प्लानेट मे उपस्थित हैं । अत: हम कह सकते हैं कि जन्म समय लगभग ठीक है और इसके द्वारा हम काफी हद तक घटना के समय का सही समय निर्धारण कर सकते हैं ।

2. जन्म और गोचर के रूलिंग प्लानेट्स का कुंडली निर्माण के समय के ग्रह स्पष्ट में सम्बन्ध ।

जन्म के रूलिंग प्लानेट्स हैं – मंगल बुध, चन्द्र बुध, चन्द्र

गोचरीय रूलिंग प्लानेट्स हैं – मंगल शनि, बुध सूर्य, शनि

अब कुंडली निर्माण के ग्रहों की स्थिति देखिये ।

जन्मकालीन रूलिंग मंगल गोचर में शनि की राशि में स्थित है ।

जन्मकालीन रूलिंग बुध गोचर में बुध के नक्षत्र में, शनि के न.उप.उप. में स्थित है ।

चन्द्रमा बुध की राशि में स्थित है ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

शनि बुध की राशि में स्थित है ।

मंगल बुध के न.उप. में स्थित है ।

अत: जन्म और कुंडली निर्माण के समय के रूलिंग प्लानेट्स में परस्पर सम्बन्ध है । इसा प्रकार इस विधि से भी यह तय हो जाता है कि जन्म समय काफी हद तक सही है ।

3. जन्म लग्न और गोचरीय चन्द्र के सामूहिक शासकों का आपस में सम्बन्ध ।

जन्म लग्न के सामूहिक शासक – मंगल–बुध–शनि–चन्द्र

गोचरीय चन्द्र के सामूहिक शासक – बुध–सूर्य–शनि–गुरु

अब कुंडली निर्माण के समय की ग्रह स्थिति में इन सामूहिक शासकों का पारस्परिक सम्बन्ध देखते हैं ।

जन्मकालीन मंगल एवं गोचरीय बुध का वर्तमान ग्रह स्थिति में सम्बन्ध –

मंगल बुध के न.उप. में स्थित है ।

बुध और सूर्य का सम्बन्ध – सूर्य और बुध मीन राशि में युत हैं ।

शनि–शनि का सम्बन्ध – दोनों एक ही हैं ।

चन्द्र–गुरु का सम्बन्ध – चन्द्र गुरु के न.उप.उप. में स्थित है एवं दोनो परस्पर दृष्ट हैं ।

अत: हम कह सकते हैं कि जन्म समय लगभग सही है, लगभग इसलिये क्योंकि अभी तक हमने जातक के लिंग पर विचार नहीं किया है ।

4. जन्मकुंडली में चतुर्थ और नवम भाव के सामूहिक शासकों में सम्बन्ध

चतुर्थ भाव के सामूहिक शासक – गुरु–शनि–शुक्र–गुरु

नवम भाव के सामूहिक शासक – सूर्य केतु मंगल बुध

अब जन्म समय के ग्रह स्पष्ट में इनके मध्य सम्बन्ध देखिये –

गुरु–सूर्य – गुरु सूर्य की राशि में है, सूर्य गुरु के नक्षत्र में है ।

शनि–केतु – शनि केतु के उप.उप. मे और केतु शनि की राशि एवं न.उप. में स्थित है ।

शुक्र–मंगल – शुक्र मंगल के नक्षत्र में और मंगल शुक्र के न.उप. में स्थित है ।

गुरु–बुध – बुध गुरु के नक्षत्र में है ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

इस प्रकार पुन: हम कह सकते हैं कि जन्म समय काफी शुद्ध है ।

5. जातक के लिंग का निर्धारण –

जन्म लग्न का उप.उपाधिपति = चन्द्र

चन्द्र का उप. उपाधिपति = शनि

शनि का उपाधिपति = मंगल

मंगल कन्या राशि और सूर्य के नक्षत्र में (उ.फाल्गुनी) जो कि एक पुरुष संज्ञक नक्षत्र है ।

अत: जातक का लिंग पुरुष हुआ और है भी ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं जातक का जन्म समय काफी शुद्ध है ।

हाँ यहां हमने राहु–केतु पर विचार नही किया क्योंकि ज़रूरत ही नही पड़ी, हाँ चूंकि गोचरीय रूलिंग प्लानेट्स में बुध आया है और केतु बुध की राशि में होने से बुध का प्रतिनिधित्व करता है तो उसे भी रूलिंग प्लानेट्स में शामिल कर लेना था पर उसकी ज़रूरत नही हुई ।

उपरोक्त उदाहरण में तो जन्म समय में संशोधन की आवश्यकता ही नही हुई, क्योंकि वह काफी सही था । इसलिये अभी भी आपके मन में शंका अवश्य होगी कि यदि संशोधन करना ही पड़ जाये तो कैसे करेंगे? तो कुछ और उदाहरण देख लिये जायें ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

उदाहरण कुंडली – 2

जातिका 04 ऑक्टूबर 1991, 23:55 घंटे,
26:42 उत्तर, 84:54 पूर्व
केपी अयनांश 23:38:27

कुंडली निर्माण के समय के रूलिंग प्लानेट्स 23 मार्च 2011 21:42:30 बजे ।

लग्न – शुक्र–गुरु–गुरु–बुध

चंद्र – मंगल–शनि–शनि–शनि

वाराधिपति – बुध

जन्म लग्न के सामूहिक शासक – बुध–गुरु–चंद्र–शनि

बुध, गुरु, शनि तो रूलिंग में उपस्थित हैं परंतु चंद्र उपस्थित नहीं है । इसलिये जन्म समय में संशोधन आवश्यक है । राहु गुरु का एवं केतु बुध और शनि का प्रतिनिधित्व करता है । बुध शनि और गुरु रूलिंग प्लानेट्स में उपस्थित हैं अत: राहु और केतु को भी रूलिंग प्लानेट्स में शामिल कर लिया ।

जन्म लग्न के सामूहिक शासक – बुध–गुरु–चंद्र–शनि

रूलिंग चंद्र के सामूहिक शासक – मंगल–शनि–शनि–शनि

अब गोचर कुंडली में इन सामूहिक शासकों के मध्य सम्बंध देखा जाये ।

बुध–मंगल = मंगल बुध के उप.उप. में स्थित है ।

गुरु–शनि = गुरु शनि के उप.उप. में स्थित है ।

चंद्र–शनि = दोनों एक दूसरे के नक्षत्र में स्थित हैं ।

शनि–शनि = दोनो एक ही ग्रह हैं,

परंतु शनि का शनि से कोई सीधा सम्बंध नहीं दिखता ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

लिंग परीक्षण भी कर लिया जाये ।

जन्म लग्न का उप.उप. = शनि

शनि का उप.उप. = गुरु

गुरु का न.उप. = शनि

शनि मकर राशि और सूर्य के नक्षत्र उ.षाढा में स्थित है जो कि पुरुष संज्ञक नक्षत्र है, परंतु यह स्त्री की कुंडली है, अत: जन्म समय में संशोधन उप.उप. क्रम पर आवश्यक है ।

विंशोत्तरी क्रम में शनि के पहले गुरु और बाद में बुध आता है । रूलिंग प्लानेट्स में देखिये कि गुरु बुध की अपेक्षा अधिक बलवान रूलिंग प्लानेट है । गुरु घटाने पर प्राप्त होगा, अत: हम घटायेंगे । 10–10 सेकेण्ड घटाने पर और हर उप.उप. के द्वारा लिंग परीक्षण करने पर हमें 23:54:10 बजे लग्न का उप.उपाधिपति राहु प्राप्त होता है ।

राहु का उप.उपाधिपति = बुध

बुध का न.उपाधिपति = बुध

बुध कन्या राशि और चंद्र के नक्षत्र हस्त में स्थित है जो कि एक स्त्री संज्ञक नक्षत्र है ।

अत: संशोधित जन्म समय 23:54:10 हुआ ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

उदाहरण कुंडली – 3

जातिका – 23 अगस्त 1970, प्रात: 09:30 से 10:30 बजे के मध्य ,

21:06 उत्तर, 79:06 पूर्व

केपी अयनांश – 23:20:52

कुंडली निर्माण का समय = 23 मार्च 2011, 22:16:16 बजे ।

रूलिंग प्लानेट्स –

लग्न – शुक्र–गुरु–शुक्र–गुरु

चन्द्र – मंगल–शनि–शनि–बुध

वाराधिपति – बुध

अब देखिये कि 09:30 से 10:30 के बीच कौन कौन से लग्न पड़ते हैं ।

दो लग्न पड़ते हैं कन्या एवं तुला ।

कन्या का स्वामी बुध है और तुला का स्वामी शुक्र ।

wyomeshd@yahoo.com

रूलिंग प्लानेट्स में देखिये कि शुक्र बुध की अपेक्षा प्रथम दर्ज़े का रूलिंग प्लानेट है, अत: लग्न तुला ही होगा । 09:49:57 तक तो कन्या लग्न था । अत: जन्म इसके बाद की तुला लग्न में हुआ है ।

अब 09:49:58 से 10:30 तक कौन से नक्षत्र होते हैं यह देखिये ।

मंगल और राहु के नक्षत्र होते हैं ।

रूलिंग प्लानेट्स में पुन: देखिये कि मंगल चन्द्र का राशि स्वामी है एवं राहु रूलिंग गुरु का प्रतिनिधित्व करता है परंतु गौड़ रूलिंग प्लानेट है अत: मंगल विजयी हुआ । इसलिये नक्षत्र तो मंगल का ही होगा । मंगल का यह नक्षत्र 09:49:58 से लेकर 10:18:59 बजे तक है । अर्थात जन्म इसी समयांतराल में हुआ है ।

For Personal Use Only

अब लग्न के न.उप की गणना करनी है । तो देखिये कि 09:49:58 से 10:18:59 बजे के मध्य कौन कौन से न.उप. आते हैं ।

09:49:58 पर = बुध

09:58:10 पर = केतु

10:01:33 पर = शुक्र

10:11:14 पर = सूर्य

10:14:09 पर = चन्द्र 10:18:59 तक

हम रूलिंग शुक्र पर एक बार विचार कर चुके हैं, परंतु यदि रूलिंग लग्न को देखा जाये तो शुक्र दो बार स्थित है जिसे हमें ईश्वरीय ईशारा समझना चाहिये कि हमें दूसरी बार समय आने पर पुन: शुक्र पर विचार करना चाहिये । तो समय आ गया, हमारे पास शुक्र 10:01:33 से 10:11:13 बजे तक का समयांतराल है और शुक्र प्रथम दर्जे का रूलिंग प्लानेट भी है तो तय हो गया कि जन्म इसी समय के बीच हुआ ।

अब 10:01:33 बजे से 10:11:13 बजे के बीच के न.उप.उपाधिपतियों को निकालना कठिन कार्य है । परंतु अभी उप.उपाधिपति का निर्णय बाकी है । क्या किया जाये । फंस गये? ईश्वरीय मदद है आपके साथ ये ना भूलिये । रूलिंग शुक्र और मंगल पर तो हम विचार कर चुके । तो बचे हुए रूलिंग प्लानेट्स हुए गुरु, शनि, बुध, राहु और केतु ।

इसमें से गुरु सर्वाधिक बलशाली रूलिंग प्लानेट होगा क्योंकि रूलिंग लग्न का नक्षत्राधिपति भी है । परंतु राहु चूंकि रूलिंग गुरु का प्रतिनिधि है इसलिये गुरु पर विचार करने से पूर्व हमें राहु पर विचार करना चाहिये यह केपी का सामान्य नियम है । तो 10:05:01 बजे हमें लग्न का उप.उपाधिपति राहु प्राप्त हो जायेगा ।

लिंग परीक्षण में भी राहु को खरा उतरना चाहिये ।

राहु का न.उप.उपाधिपति = केतु

केतु का न.उप. = शनि

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

शनि मेष राशि और सूर्य के नक्षत्र कृत्तिका में स्थित है जो कि एक स्त्री संज्ञक नक्षत्र है और जातिका स्त्री ही है । इस प्रकार संशोधित जन्म समय होगा = 10:05:01 बजे ।

परंतु 10:06:27 तक लग्न का उप.उपाधिपति राहु ही रहने वाला है । इसलिये और अधिक बारीकी में जाने के लिये हमें उप.उप.उप. स्वामी की आवश्यकता है और लगभग सारे सॉफ्टवेयर्स में केवल उप.उप. तक गणना की व्यवस्था है, मैं भी ऐसा ही प्रोग्राम उपयोग में ला रहा हूँ । और बारीकी में जाने के लिये हमें स्वयं उप.उप.उप. की गणना करनी होगी जो दुष्कर कार्य है । 10:05:01 से 10:06:27 का अंतर 1 मिनिट और 26 सेकेण्ड का है अर्थात कुल 86 सेकेंडों का । 86/2 = 43 सेकेंड यह मध्य मान हुआ, जिसे हम उप.उप.उप. लेवल पर अपना सकते हैं । 10:05:01 + 00:00:43 = 10:05:44 बजे संशोधित समय को लिया जा सकता है ।

इस जातिका का विवाह 12 मई 1994 को हुआ । उस समय 10:05:44 बजे के हिसाब से राहु/राहु/बुध में चन्द्र या मंगल की सूक्ष्म दशा चल रही थी ।

राहु भले ही सीधे सीधे 2,7, या 11 का कार्येश न बनता हो परंतु केपी का नियम यह भी है कि कार्येश द्वारा दृष्ट ग्रह भी कार्येश बन जाता है । देखिये ज़रा, राहु सूर्य और मंगल द्वारा दृष्ट है एवं सूर्य और मंगल दोनो ही 2,7 या 11 के सबल कार्येश हैं । मंगल तो भाव–7 का स्वामी है एवं सूर्य भाव–11 में स्वराशि में बैठा है । ऊपर से राहु शनि का प्रतिनिधित्व करता है और शनि स्वयं भाव–7 में स्थित है और शनि के नक्षत्र में कोई ग्रह भी नही है । अत: शनि भाव–7 का सबल कार्येश है, और केपी का नियम कहता है कि यदि राहु केतु किसी कार्येश ग्रह का प्रतिनिधित्व करते हों तो पहले राहु केतु को प्राथमिकता दी जानी चाहिये ना कि उस कार्येश को जिनका राहु केतु प्रतिनिधित्व कर रहे हैं ।

तो बस इस प्रकार राहु विवाह का फल देने के लिये तत्पर हो गया । राहु की महादशा 20 दिसम्बर 1992 से प्रारम्भ होकर 18 साल तक चलनी थी, अर्थात जातिका की 22.5 वर्ष की आयु से लगभग 40 वर्ष की अवस्था तक, और इस आयु अंतराल में तो साधारणत: विवाह हो ही जाता है ।

राहु भाव–5 में स्थित है एवं भाव–7 में स्थित शनि का प्रतिनिधित्व करता है । राहु पर विवाह के कार्येशों की दृष्टि है सप्तमेश मंगल की भी दृष्टि है और नैसर्गिक शुभ ग्रह गुरु की भी । अत: जातिका ने राहु की महादशा में अपनी पसन्द के वर से सजातीय विवाह किया जिसमें दोनों परिवारों की सहमति भी थी ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

उदाहरण कुंडली – 4.

जातक – 20 सितम्बर 1971, 21:45 घंटे,

19:12 उत्तर, 73:06 पूर्व

केपी अयनांश – 23:21:45

कुंडली निर्माण का समय – 24 मार्च 2011, 10:26:33 बजे

रूलिंग प्लानेट्स

लग्न – शुक्र–चन्द्र–सूर्य–बुध

चन्द्र – मंगल–शनि–सूर्य–केतु

वाराधिपति – गुरु

राहु– गुरु का और केतु बुध और शनि का प्रतिनिधित्व करता है । इसलिये इन्हें भी रूलिंग प्लानेट्स में शामिल कर लिया जाये ।

जन्म लग्न के सामूहिक शासक – शुक्र–सूर्य–गुरु–शनि

मुख्य 5 रूलिंग प्लानेट्स में सूर्य उपस्थित नही है, परंतु गौड़ रूलिंग प्लानेट्स में सूर्य है ।

अत: जन्म समय में अधिक संशोधन की ज़रूरत नहीं पड़ना चाहिये ।

जन्म लग्न के सामूहिक शासक – शुक्र–सूर्य–गुरु–शनि

रूलिंग चन्द्र के सामूहिक शासक – मंगल–शनि–सूर्य–केतु

अब गोचर कुंडली में इन सामूहिक शासकों के बीच का सम्बन्ध देखिये ।

शुक्र–मंगल = शुक्र मंगल के नक्षत्र में स्थित है ।

सूर्य–शनि = सूर्य शनि के नक्षत्र में स्थित है ।

गुरु–सूर्य = सूर्य गुरु की राशि में स्थित है ।

शनि–केतु = केतु पर शनि की दृष्टि है ।

अर्थात जन्म समय लगभग ठीक है, लगभग इसलिये कि अभी हमने जातक का लिंग परीक्षण नहीं किया है ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

लग्न का उप.उप. = शनि

शनि का उप.उप. = केतु

केतु का न.उप. = केतु

केतु कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र आश्लेषा में स्थित है जो कि एक पुरुष संज्ञक नक्षत्र है और जातक है भी पुरुष । तो दिया गया जन्म समय 21:45 सही है ।

जातक का प्रथम विवाह 28–मार्च–2003 को हुआ । उस दिन गुरु/गुरु/शनि/शुक्र की दशांतर्दशा चल रही थी । गुरु, शनि और शुक्र 2,7 या 11 के कार्येश हैं । गुरु शनि के नक्षत्र में स्थित है, शनि भाव 10 का अधिपति होकर भाव–1 में स्थित है । गुरु का न.उप. स्वामी केतु है जो भाव 6 के अधिपति बुध का प्रतिनिधित्व करता है । इस प्रकार गुरु की महादशा विवाह और पृथकता की द्योतक है । इस कारण जातक के इस विवाह का जीवन अधिक लम्बा न खिंच सका ।

भाव–7 का न.उप स्वामी राहु कस्प कुंडली में भाव 9 में स्थित है जिसमें द्विस्वभाव राशि धनु स्थित है । भाव–7 का न.उप. राहु द्विस्वभाव राशि अधिपति बुध के न.उप. में स्थित है, बुध भी राहु के न.उप. में स्थित है । राहु सप्तमेश मंगल के साथ स्थित होकर मंगल का प्रतिनिधित्व करता है और इस मंगल की राशि में भाव–7 में द्विस्वभाव राशि अधिपति गुरु स्थित है । भाव–2 में भी बुध की राशि स्थित है । इस प्रकार जातक की कुंडली में एकाधिक विवाह की सम्भावना भी दिखाई देती है ।

जातक गुरु/शुक्र/शनि या गुरु/शुक्र/गुरु की दशांतर्दशा में दूसरा विवाह कर सकता है क्योंकि इन्ही ग्रहों की दशांतर्दशा में प्रथम विवाह हुआ था अर्थात ये ग्रह विवाह के सबल कार्येश हैं ।

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

उदाहरण कुंडली – 5

जातक 03 फरवरी 1961, 13:20 घंटे (भारतीय मानक समय)

18:30 उत्तर, 73:54 पूर्व

केपी अयनांश – 23:12:54

कुंडली निर्माण का समय – 24 मार्च 2011, 17:08:39 बजे ।

रूलिंग प्लानेट्स –

लग्न – सूर्य–शुक्र–गुरु–मंगल

चन्द्र – मंगल–शनि–राहु–चन्द्र

वाराधिपति – गुरु

राहु गुरु का और केतु शनि का प्रतिनिधित्व करता है अत: इन्हे भी शामिल कर लिया ।

लग्न के सामूहिक शासक – शुक्र–चन्द्र–चन्द्र–बुध

इनमें से चन्द्र और बुध 5 मुख्य रूलिंग प्लानेट्स में उपस्थित नहीं हैं ।

अत: जन्म समय में संशोधन की आवश्यकता पड़ सकती है ।

जन्म लग्न के सामूहिक शासक – शुक्र–चन्द्र–चन्द्र–बुध

रूलिंग चन्द्र के सामूहिक शासक – मंगल–शनि–राहु–चन्द्र

गोचर कुंडली में इनका सम्बन्ध देखा जाये ।

शुक्र–मंगल = शुक्र मंगल के नक्षत्र में स्थित है । अत: लग्न सही है ।

चन्द्र–शनि = चन्द्र शनि के नक्षत्र में स्थित है । अत: नक्षत्राधिपति भी सही है ।

चन्द्र–राहु = चन्द्र और राहु एक दूसरे के न.उप. में स्थित हैं । अत: यह भी सही है ।

बुध–चन्द्र = बुध और चन्द्र में सीधा कोई सम्बन्ध नहीं है । अत: संशोधन की आवश्यकता है ।

समय दिये गये समय से पूर्व का होगा या बाद का ? अर्थात हमें घटाना है या जोड़ना है ? विंशोत्तरी क्रम में जन्म लग्न के न.उप.उप. बुध के एक पहले शनि आता है और एक बाद केतु आता है । शनि रूलिंग

wyomesh@yahoo.com
For Personal Use Only

चन्द्र का न.उप. है और केतु गौड़ रूलिंग प्लानेट है, अत: शनि अधिक बलवान रूलिंग प्लानेट है । और चूंकि शनि बुध से पहले आता है, हम घटायेंगे ।

इस प्रकार 10–10 सेकेण्ड घटा कर हम हर प्राप्त न.उप.उप. के द्वारा लिंग परीक्षण करेंगे । 13:19:20 पर हमें जन्म लग्न के सामूहिक शासक प्राप्त होंगे –

शुक्र–चन्द्र–चन्द्र–शनि

शनि का न.उप.उप = बुध

बुध का न.उप. = गुरु

गुरु धनु राशि और सूर्य के नक्षत्र उ.षाढा में स्थित है जो कि पुरुष संज्ञक नक्षत्र है और जातक है भी पुरुष । बदला गया न.उप.उप. शनि भी 5 मुख्य रूलिंग प्लानेट्स में उपस्थित है । वह रूलिंग चन्द्र के न.उप.उप. चन्द्र से सम्बन्धित भी है – शनि चन्द्र के नक्षत्र में स्थित है । अत: 13:19:20 बजे का समय संशोधित समय होगा । जन्म कुंडली में भी चतुर्थ और नवम भाव के सामूहिक शासकों मध्य सम्बन्ध है । साथ ही जन्म लग्न के सामूहिक शासकों का नवम भाव के सामूहिक शासकों से सम्बन्ध है ।

अब देखिये कि 13:18:45 से 13:19:20 बजे तक लग्न का न.उप.उप शनि ही रहने वाला है । तो जन्म इसी समय के मध्य हुआ है । और बारीकी में जाने के लिये न.उप.उप.उप. की आवश्यकता पड़ेगी जिसका प्रावधान मेरे द्वारा उपयोग में लाये गये सॉफ्टवेयर में नहीं है । इसलिये 35 सेकेण्ड के इस अंतराल में से 35/2 = लगभग 18 सेकेण्ड + 13:18:45 = 13:19:03 मिनिट का जन्म समय संशोधित समय लिया जा सकता है ।

संशोधित जन्म समय हुआ = 13:19:03 घंटे । इसके हिसाब से जातक के जीवन की कुछ घटनायें देखिये ।

जातक को प्रथम स्थायी नौकरी नवम्बर 1979 में प्राप्त हुई । चन्द्र/मंगल/राहु की दशांतर्दशा में और आप देख सकते हैं कि ये ग्रह 2,6,10,11 के कार्येश हैं ।

जातक का विवाह 09 मई 1993 को हुआ । मंगल/बुध/शनि/शुक्र की दशांतर्दशा में विवाह हुआ । मंगल, बुध और शुक्र तो 2,7 या 11 के सबल कार्येश हैं, परंतु शनि भी कार्येश बनता है क्योंकि शनि की राशि कुम्भ भाव–11 में गायब हो चुकी है । भाव 10 के मकर के बाद भाव 11 में मीन राशि है । शनि पर

wyomeshd@yahoo.com
For Personal Use Only

विवाह के सबल कार्येश मंगल की आठवीं दृष्टि भी है । शनि राहु के न.उप. में स्थित है और राहु भाव–11 में स्थित शुक्र के नक्षत्र में स्थित है । अत: शनि भी विवाह देने वाला बन गया ।

दशानाथ मंगल का गोचर चन्द्र/शनि/चन्द्र/बुध से हो रहा था ।

बुध का मंगल/शुक्र/चन्द्र/राहु से ।

शनि का शनि/मंगल/चन्द्र/राहु से ।

शुक्र का गुरु/शनि/राहु/चन्द्र से ।

सूर्य का मंगल/शुक्र/बुध/सूर्य से गोचर चल रहा था विवाह के दिन ।

मंगल–शनि–सूर्य–राहु सप्तम भाव के सामूहिक शासक हैं । बुध और राहु द्वितीय भाव के और गुरु,चन्द्र, शुक्र भाव–11 के सामूहिक शासक हैं । मंगल, बुध, चन्द्र, राहु, शुक्र, गुरु 2,7, या 11 के कार्येश भी हैं ।

wyomeshd@yahoo.com

इस प्रकार से रूलिंग प्लानेट्स के द्वारा आप जन्म समय में संशोधन कर जातक के जीवन की घटनाओं के सम्बन्ध में सटीकता से भविष्यकथन कर सकते हैं ।

व्योमेश दीपंकर
wyomeshd@yahoo.com

ॐ श्री परमात्मने नम:
सर्वे भवंतु सुखिन:
शांति: शांति: शांति:

For Personal Use Only